

## पाठ 24 पाठ

### यम्क प्रश्न

(शिक्षक श्रेणी कोठामा सोमोराब लगे लगे छात्र-छात्री सकले थियैहे तेउँक अभिवादन जनाले। शिक्षके छात्र-छात्रीब हाजिबा लले।)

शिक्षक : छात्र-छात्रीसकल, योरा सण्हात मष्प महाभाबतब 'यम्क प्रश्न' अध्यायटो तामालोकब पढाम्पछिलौं। आजि आमि ताके अभिनय करिबम। कोराचान, तामालोकब कोने कोने स्पयात भाग ल'वा?

(तिनिजन छात्र अभिनय करिबब बाबे ठिय ह'ल।)

शिक्षक : ठिक आछे। विमल, अविनाश तामालोक दुयो अभिनय करिवा। आरु सुशांत, तुमि यम्क पर्वब

(शिक्षक कक्षा में प्रवेश करते हैं। छात्र-छात्राएँ उनका अभिवादन करते हैं। शिक्षक उनकी हाजरी लेते हैं।)

शिक्षक : प्रिय विद्यार्थियो! हम लोगों ने पिछले सप्ताह महाभारत का प्रसंग 'यक्ष-प्रश्न' पढ़ा था। आज हम उसका अभिनय करेंगे। बताओ, तुम में से कौन-कौन इसमें भाग लेगा?

(तीन छात्र अभिनय करने के लिए खड़े होते हैं।)

शिक्षक : अच्छा, विमल, अविनाश तुम लोग अभिनय करोगे। सुशांत तुम यक्ष-पर्व की भूमिका पेश करोगे।

(सुशांत शुरु करता है)

ভূমিকাডোখৰ ক'বা।

(সুশান্তৰ আৰম্ভ কৰিলে)

সুশান্ত : ৰাজ্যৰ পৰা নিৰ্বাসিত পঞ্চ পাণ্ডৱ  
আৰু দ্ৰৌপদী বনে বনে ঘূৰি  
ফুৰিছিল। এনেতে দ্ৰৌপদীৰ পিয়াহ  
লগাত তেওঁ যুধিষ্ঠিৰক পানী  
আনিবলৈ কলে। যুধিষ্ঠিৰে পানীৰ  
সন্ধান কৰিবলৈ ভীমক পঠিয়াস্প  
দিলে। কিন্তু বহু বিচাৰৰ পিছতো  
ভীমে ক'তো পানী নাপালে।  
তেতিয়া ধৰ্মস্প পুত্ৰ যুধিষ্ঠিৰৰ  
বিপত্তি দেখি সৰোৱৰৰ এটা সৃষ্টি  
কৰি দিলে আৰু পাণ্ডৱৰ পৰীক্ষা  
ল'বৰ বাবে তেওঁ যক্ষৰ ৰূপ ধৰি  
সৰোৱৰৰ পাৰত বৈ থাকিল।

শিক্ষক : সুন্দৰ হৈছে সুশান্ত। তাৰ পিছত  
কি হ'ল?

সুশান্ত : পানী বিচাৰি বিচাৰি ভীম আহি  
সেই সৰোৱৰৰ পাৰত উপস্থিত  
হ'ল। যক্ষস্প ভীমক ক'লে --  
'শুনা পাণ্ডুপুত্ৰ, পানী খোৱাৰ  
আগতে মোৰ প্ৰশ্ন কেইমানে

সুশান্ত : পাঁচোঁ পাণ্ডৱ দ্ৰৌপদী কে সাথ  
নিৰ্বাসিত হোৱাৰ জংগল-জংগল ভটক  
ৰহে থে। ৰাস্তে মেন্ দ্ৰৌপদী কো প্যাস  
লগী। দ্ৰৌপদী নে যুধিষ্ঠিৰ সে পানী  
কে লিএ কহা। যুধিষ্ঠিৰ নে ভীম কো  
পানী কী তলাশ মেন্ ভেজা। পৰ ভীম  
কো কহী পানী নহী মিল। তৰ ধৰ্ম  
নে যুধিষ্ঠিৰ কী বিপত্তি কো দেখক  
এক সৰোৱৰ কা নিৰ্মাণ কৰ দিয়া  
লেকিন পাণ্ডৱোঁ কী পৰীক্ষা লেনে কে  
লিএ ধৰ্ম যক্ষ কে ৰূপ মেন্ সৰোৱৰ কে  
কিনাৰে খড়ে হো গএ।

শিক্ষক : बहुत अच्छा। अब आगे बताओ क्या  
हुआ?

सुशान्त : उसके बाद भीम पानी की तलाश में  
उसी सरोवर पर जा पहुँचा। यक्ष ने  
भीम से कहा -- सुनो पाण्डुपुत्र! पानी  
पीने से पहले तुम्हें मेरे कुछ प्रश्नों  
के उत्तर देने होंगे। लेकिन भीम ने  
प्रश्न को अनसुना कर दिया और  
पानी पीने के लिए आगे बढ़ गया।  
पानी पीते ही भीम अचेत हो गया।  
इसीप्रकार पानी की तलाश में आए  
अर्जुन, नकुल और सहदेव भी पानी  
पीकर अचेत हो गए। तब खुद  
युधिष्ठिर सरोवर पर पहुँचे। यक्ष ने  
उनसे भी प्रश्नों के उत्तर देने के

উত্তৰ দিয়া।' কিন্তু ভীমে যক্ষক  
অবজ্ঞা কৰি পানী খাবৰ বাবে  
আগবাঢ়িল। সৰোবৰৰ পানী  
খাওঁতেষ্প ভীম অচেতন হৈ  
পৰিল। ঠিক এষ্পদৰেষ্প  
অৰ্জুন,

নকুল আৰু সহদেৱৰো  
একে দশা হোৱাত যুদ্ধিষ্ঠিৰ  
নিজেষ্প পানী বিচাৰি সৰোবৰৰ  
পাৰত উপস্থিত হ'লহি। যক্ষষ্প  
তেওঁকো প্ৰশ্ন কেষ্পামানৰ  
উত্তৰ দিবলৈ কলে।

শিক্ষক : ৰবা সুশান্ত। এতিয়া বিমল আৰু  
অবিনাশে অভিনয় কৰিব।

(অভিনয় আৰম্ভ হ'ল)

যক্ষ : ৰবা যুদ্ধিষ্ঠিৰ। তুমি পানী  
নাখাবা। প্ৰথমে মোৰ প্ৰশ্নৰ উত্তৰ  
দিয়া। তাৰ পাছত হে পানী খাব  
পাৰিবা। নহলে তোমাৰো সৰু  
ভায়েৰাইঁতৰ দৰেষ্প দশা হব।

যুদ্ধিষ্ঠিৰ : ভাল কথা। আপুনি আপোনাৰ প্ৰশ্ন

লিএ কথা।

শিক্ষক : ঠিক হৈ সুশান্ত। अब विमल और  
अविनाश अभिनय करेंगे।

(अभिनय शुरू होता है।)

यक्ष : रुको युधिष्ठिर! पानी पीने से पहले  
मेरे प्रश्नों का उत्तर दो। नहीं तो  
अपने छोटे भाइयों की सी दशा  
तुम्हारी भी होगी।

युधिष्ठिर: अच्छी बात है। आप अपने प्रश्न  
पूछें, हे मायावी देव! मैं उत्तर देने  
का प्रयास करूँगा।

- सोधक -- हे मायावी देवता! मष्प  
उत्तर दिवले चेष्टा करिम।
- यक्ष : वारु कोरा, बेलिंठो सदाय कार  
आदेशत उलाय?
- युधिष्ठिर : बेलिंठो सदाय परम ब्रह्म  
निर्देशतहे उलाय।
- यक्ष : वारु, विपदत मानुहक किहे बक्ष्मा  
करे?
- युधिष्ठिर : मानुहक विपदत केरल साहसेहे  
बक्ष्मा करे। अष्पन एकोरे  
नोराबे।
- यक्ष : ठिकेष्प कैछा। एष्पवार कोरा,  
कि शास्त्र पढिले मानुह ज्ञानी हय?
- युधिष्ठिर : कोनो शास्त्र पढि मानुह ज्ञानी हव  
नोराबे। स९ लोक आरु  
महापुरुषर संगष्पहे मानुहक ज्ञानी  
करे।
- यक्ष : वारु, पृथिवीर बाहिरे अष्पन  
कोने आमाक डालके बक्ष्मा करे?
- युधिष्ठिर : आमार सहनशीला मातृयेहे
- यक्ष : अच्छा बताओ -- सूरज किसके  
आदेश से रोज निकलता है?
- युधिष्ठिर: परम ब्रह्म के निर्देश से।
- यक्ष : अच्छा, विपत्ति में मनुष्य की कौन  
रक्षा करता है?
- युधिष्ठिर: केवल साहस ही मनुष्य की विपत्ति  
में रक्षा करता है। दूसरा कोई  
नहीं।
- यक्ष : ठीक! अब बताओ कौन-सा शास्त्र  
पढ़ने पर मनुष्य ज्ञानी बनता है?
- युधिष्ठिर: कोई भी शास्त्र पढ़कर मनुष्य ज्ञानी  
नहीं बनता। सत्संग से ही मनुष्य  
ज्ञानी बनता है।
- यक्ष : बताओ! पृथ्वी को छोड़कर दूसरे  
कौन हमारी रक्षा करते हैं?
- युधिष्ठिर: हमारी सहनशीला माँ, हमारी ठीक  
से रक्षा करती है।
- यक्ष : अब बताओ, आकाश से भी ऊँचा  
क्या है?

आमाक डालकै बम्बा करे।  
 यम्क : डाल कथा, एम्पवार कोरा,  
 आकाशतकै ओख कि?  
 युधिष्ठिर : पितृदेवरेम्प सकलौतकै ओख।  
 यम्क : बारू, वायुतकै वेगरान कोन  
 कोरा?  
 युधिष्ठिर : मनतकै बेछि वेगरान कोनो  
 नाम्प।  
 यम्क : सवातौकै बेछि दहनशील कि?  
 युधिष्ठिर : शोकातुब हृदयतकै बेछि दहनशील  
 एकौ नाम्प।  
 यम्क : विदेशत थकाजनब बावे प्रकृत  
 बन्नु कोन?  
 युधिष्ठिर : विद्याम्प परम बन्नु। का-पम्पचातकै  
 विद्याम्पहे विदेशत प्रकृत सहायक।  
 यम्क : सुख क'त पोरा याय, कोरा?  
 युधिष्ठिर : सज प्रवृत्ति वा सज आचरणहेत  
 सुख पोरा याय।  
 यम्क : लोकप्रिय हबैले मानुहे कि बन्नु

युधिष्ठिर: पिता सब से ऊँचा होता है।  
 यक्ष : अच्छा, वायु से तेज कौन है?  
 युधिष्ठिर: मन से तेज और कोई नहीं।  
 यक्ष : सब से अधिक दहनशील वस्तु क्या  
 है?  
 युधिष्ठिर: शोकार्त हृदय से अधिक दहनशील  
 कुछ नहीं है।  
 यक्ष : परदेश में स्वाभाविक बंधु कौन है?  
 युधिष्ठिर: विद्या ही सबसे अच्छा मित्र है।  
 विदेश में विद्या ही काम में आता  
 है।  
 यक्ष : सुख कहाँ मिलता है - बताओ।  
 युधिष्ठिर: सहज प्रवृत्ति या सदाचार में सुख  
 मिलता है।  
 यक्ष : लोकप्रिय बनने के लिए आदमी को  
 क्या त्याग करना चाहिए?  
 युधिष्ठिर: लोकप्रिय बनने के लिए आदमी को  
 आत्माभिमान का त्याग करना  
 चाहिए।  
 यक्ष : दुःखों का मूल कारण क्या है?  
 युधिष्ठिर: गुस्सा ही दुःखों का मूल कारण है।  
 यक्ष : कौन-सी चीज़ न रहने पर आदमी

त्याग कबा उचित?

युधिष्ठिर : लोकप्रिय हबलै मानुहे

आम्नाभिमान त्याग कबा उचित।

यम्क : दुःखर मूल कारण कि?

युधिष्ठिर : खण्डेम्प दुःखर मूल कारण।

यम्क : कि वस्तु नहले मानुह धनी हब पाबे?

युधिष्ठिर : आशा वा कामना पबित्याग कबिले मानुह सम्पदशाली हय।

यम्क : युधिष्ठिर, संसारत सबातोके आश्चर्या कि?

युधिष्ठिर : 'मानुह मरणशील' बुलि जानिओ मानुहे ज्ञीयाम्प थाकिबलै आकांक्षा कबाटोरुम्प सकलोतकै आचरित कथा।

यम्क : तोमार उतबत मम्प प्रसन्न। मम्प धर्मराज। मोर पबीक्षात तुमि उतीर्ण हैछा। तोमाक कि लागे कोरा।

युधिष्ठिर : प्रणाम! .....

अमीर बन सकता है?

युधिष्ठिर: आशा या कामना का त्याग करने पर आदमी अमीर बन सकता है।

यक्ष : युधिष्ठिर, संसार में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?

युधिष्ठिर: मनुष्य मरता है -- इस बात को जानते हुए भी मनुष्य की जीवित रहने की आकांक्षा -- सबसे बड़ा आश्चर्य है।

यक्ष : तुम्हारे उत्तरों से मैं संतुष्ट हूँ। मैं धर्मराज हूँ। मेरी परीक्षा में तुम उत्तीर्ण हुए हो। तुम्हें क्या चाहिए, बताओ।

युधिष्ठिर: प्रणाम! .....  
(बीच में टोक कर)

शिक्षक : बहुत सुंदर! किंतु यक्ष ने तो चार ही प्रश्न किए थे, तुमने तेरह प्रश्न बना दिए।

विमल और

अविनाश : महाशय! वे कौन से थे?

शिक्षक : वे प्रश्न थे --

सबसे वेगवान कौन है?

सबसे श्रेष्ठ कौन है?

सबसे सुखी कौन है? और

सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?

इन चारों प्रश्नों के सही उत्तर देने

শিক্ষক : সুন্দৰ হৈছে। কিন্তু যক্ষস্পটা চাৰি  
প্ৰশ্নহে কৰিছিল, তোমালোকে  
দেখোন তেৰা বনাম্প দিলা।

বিমল আৰু

অবিনাশ: চাৰ, সেম্প কেম্পানো কি কি  
আছিল?

শিক্ষক : সেম্প কেম্পা আছিল --

সকলোতকৈ বেগৱান কোন?

সকলোতকৈ শ্ৰেষ্ঠ কোন?

সকলোতকৈ সুখী কোন?

সকলোতকৈ ডাঙৰ আশ্চৰ্য্য  
কি?

এম্প চাৰিওটা প্ৰশ্নৰ সঠিক  
উত্তৰ দিয়াৰ পিছত যক্ষস্প  
যুধিষ্ঠিৰক সুধিছিল যে চাৰিওজন  
ভায়েকৰ ভিতৰত তেওঁ কাক  
জীৱিত অবস্থাত পাবলৈ বিচাৰে।  
তেতিয়া যুধিষ্ঠিৰে সহদেৱৰ নাম  
কলে। যক্ষস্প আচৰিত হৈ সুধিলে,  
'তুমি নিজৰ সহোদৰ  
ভাম্পকেম্পজনক এৰি

পর यक्ष ने युधिष्ठिर से कहा,  
बताओ इन चारों भाइयों में से तुम  
किसे जीवित देखना चाहते हो।  
युधिष्ठिर ने सहदेव को जीवित  
करने के लिए कहा। यक्ष ने पूछा,  
ऐसा ही क्यों? तुम अपने सगे  
भाइयों को छोड़कर सहदेव को  
जीवित क्यों देखना चाहते हो?  
युधिष्ठिर ने कहा -- इसलिए कि  
सहदेव माद्री का पुत्र है और सबसे  
छोटा और प्रिय है। वह जीवित  
होगा तो कुंती की तरह माद्री का

भी एक पुत्र तो जीवित रहेगा।  
युधिष्ठिर के विचारों को सुनकर  
यक्ष प्रसन्न हो गए। उन्होंने कहा --  
तुमने सचमुच धर्म की रक्षा की है।  
मैं तुम्हारे चारों भाइयों को जीवित  
करता हूँ।

अब आज का पाठ यहीं समाप्त  
होता है। कल हम लोग दूसरा पाठ  
शुरु करेंगे।

সহদেৱক কিয় জীৱিত  
 অবস্থাত বিচাৰা?’ যুধিষ্ঠিৰে কলে  
 বোলে সহদেৱ মাদ্ৰীৰ সন্তান, আৰু  
 সকলোতকৈ সৰু আৰু প্ৰিয়।  
 সহদেৱ জীয়াস্প থাকিলে কুলীৰ  
 দৰে মাদ্ৰীৰো ঐ সন্তান জীয়াস্প  
 থাকিব। যুধিষ্ঠিৰৰ উত্তৰ শুনি যক্ষ  
 সন্তুষ্ট হ’ল আৰু কলে ‘তুমি  
 সঁচাস্প ধৰ্মৰ ৰক্ষক, মস্প তোমাৰ  
 চাৰিওজন ভায়েৰাকে জীৱিত কৰি  
 দিম।’

আজি আমি স্পয়াতে শেষ  
 কৰিছোঁ। কালিলৈ আমি দ্বিতীয়  
 পাঠটো আৰম্ভ কৰিম।

### নতুন শব্দ

অসমীয়া শব্দ	হিন্দী অৰ্থ
হাজিৰা	হাজৰী, উপস্থিতি
সপ্তাহ	সপ্তাহ
অধ্যায়	অধ্যায়
থিয়	খড়া
পিয়াহ	প্যাস

सङ्गान  
पठियाम्प दिले  
विपत्ति  
अवज्जा  
रूपधरि  
पाबत  
निर्वासित  
बने बने  
तल्ले  
आर्त  
एजन एजनकै  
नुशुनिले  
फलत  
मूर्च्छित  
कथोपकथन  
बवा  
नहले  
भायेबाइत  
दशा  
सोधक  
मायावी  
बेलिटे  
परम ब्रह्म  
अम्पन

संधान  
भेज देना  
विपत्ति  
अवज्ञा, अनसुना  
के रूप में, भेस बदलना  
किनारे पर  
निर्वासित  
वन-वन, जंगलों में  
वहाँ  
आर्त  
एक-एक करके  
नहीं सुना  
फलस्वरूप  
मूर्च्छित  
वार्तालाप  
रुको  
नहीं तो  
भाइयों  
दशा/अवस्था  
पूछिए  
मायावी  
सूरज  
परम ब्रह्म  
दूसरा  
कुछ भी

एकोरे  
 शास्त्र  
 ज्ञानी  
 संग  
 बाहिरे  
 सहनशीला  
 ভালकै  
 एम्पवार  
 आकाशतकै  
 ओथ  
 बेगरान  
 दहनशील  
 शोकातुब  
 बिदेशत  
 प्रवृत्ति  
 खं  
 मूल  
 धनी  
 पबित्याग  
 सम्पदशाली  
 आश्चर्य  
 मरणशील  
 जीयाम्प  
 प्रसन्न

शास्त्र  
 ज्ञानी  
 संग  
 छोड़  
 सहनशीला  
 अच्छी तरह  
 इस बार  
 आकाश से  
 ऊँचा  
 तेज  
 दहनशील  
 शोकार्त  
 विदेश में  
 प्रवृत्ति  
 क्रोध, गुस्सा  
 मूल  
 धनी, अमीर  
 परित्याग  
 समृद्धिशाली  
 आश्चर्य  
 मरणशील  
 जीवित  
 प्रसन्न, संतुष्ट  
 उत्तीर्ण  
 अनगिनत

উত্তীৰ্ণ	জীৱিত
অশেষ	সঁতান
জীৱিত	বে সৰ
সন্তান	সৰসে
সেম্পকেম্পা	সটীক
সকলোতকৈ	
সঠিক	

## অভ্যাস

### I. উদাহৰণ অনুসৰি বাক্য পৰিবৰ্তন কৰক।

উদাহৰণ:

(ক) তেওঁ নাযায়। মম্প যাম।

→ তেওঁ নাযায়, মম্প হে যাম।

1. তেওঁ সভালৈ নাহিল। মম্প আহিলোঁ।
2. ৰামে কথাটো নুশুনিলে। শ্যামে শুনিলে।
3. এম্পয়া পম্পচা মম্প দিয়া নাম্প। মায়ে দিছে।
4. দিখৌত পানী বঢ়া নাম্প। ব্ৰহ্মপুত্ৰত বাঢ়িছে।
5. উন্নত দেশৰ জনসংখ্যা বঢ়া নাম্প। অনুন্নত দেশৰ জনসংখ্যা বাঢ়িছে।

(খ) তুমি প্ৰথমতে উত্তৰ দিয়া। তাৰ পিছত যাব পাৰিবা।

→ তুমি উত্তৰ দিহে যাব পাৰিবা।

1. মম্প প্ৰথমতে ঘৰলৈ যাম। তাৰ পিছত বজাৰলৈ যাম।
2. অসমীয়া তিবোতাম্প প্ৰথমতে গা ধোৱে। তাৰ পাছত বন্ধা-বঢ়া কৰে।
3. মম্প প্ৰথমতে ষ্টেচনলৈ আহিলোঁ। তাৰ পিছত গম পালোঁ যে ৰেল বন্ধ।

4. আমি সকলোৱে প্ৰথমতে জলপান খাওঁ। তাৰ পিছতহে চাহ খাওঁ।

5. মস্প বস্তুটো প্ৰথমতে ভালকৈ চাম। তাৰ পিছত কিনিম।

**II. বন্ধনীৰ ভিতৰত দিয়া শব্দবোৰৰ ভিতৰত শুদ্ধ শব্দটো বাচি বাক্য পূৰণ কৰক।**

1. কোনেও মোৰ কথা \_\_\_\_\_। (শুনিলে/নুশুনিলে/নুশুনিব)

2. আজিকালি কাৰো পৰা সহায় পোৱা \_\_\_\_\_।  
(নাযায়/যায়/নগৈছিল)

3. মস্প বহুত দিন কলৈকো \_\_\_\_\_। (গৈছোঁ/যোৱা নাম্প/যাম)

4. বৰ গুণগোল কাৰো কথা \_\_\_\_\_। (নুশুনি/শুনি/শুনা যায়)

5. মস্প অসমলৈ কতবাৰ \_\_\_\_\_ তাৰ কোনো হিচাব নাম্প। (গৈছোঁ/যোৱা নাম্প/যাম)

6. ধৈৰ্যৰ বাহিৰে বিপদত আন একোৱে ৰক্ষা কৰিব \_\_\_\_\_। (পাৰে/নোৱাৰে/নপাৰে)

**III. সমানৰ্থক শব্দ লিখি প্ৰতিটো শব্দৰে একোটকৈ অৰ্থপূৰ্ণ বাক্যৰচনা কৰক।**

1. আপোনা-আপুনি

2. প্ৰকৃততে

3. ধুনীয়া

4. তিৰোতা মানুহ

5. দেৰিকৈ

**IV. উদাহৰণ অনুসৰি এটা বাক্যত উত্তৰ দিয়ক।**

উদাহৰণ: দেউতাকৰ মাকক কি কয় ? : আম্পতা

1. দেউতাকৰ ভায়েকক কি কয়?

2. দেউতাকৰ দেউতাকক কি কয়?

3. মাকৰ ভনীয়েকক কি কয়?
4. বায়েকৰ গিৰিয়েকক কি কয়?
5. খুড়াকৰ মৈনীয়েকক কি কয়?

V. পাঠৰ জ্ঞানৰ ভিত্তিত সংক্ষেপে উত্তৰ দিয়ক।

1. পঞ্চ পাণ্ডৱৰ পৰীক্ষা লবলৈ কোন আহিছিল?
2. বেলিটো সদায় কাৰ আদেশত ওলায়?
3. মানুহক বিপদত কিহে ৰক্ষা কৰে?
4. আকাশতকৈ ওখ কি?
5. দুঃখৰ মূল কাৰণ কি?
6. যুধিষ্ঠিৰৰ উত্তৰত যক্ষ সন্তুষ্ট হ'ল নে?

VI. বহলাম্প উত্তৰ দিয়ক।

1. এম্প পাঠটো পঢ়ি আপুনি কি নতুন কথা শিকিলে তাৰ ওপৰত দুআষাৰ লিখক।
2. ছাত্ৰকেম্পজনে সংলাপত কি কি নতুন কথা যোগ কৰিলে লিখক।
3. যুধিষ্ঠিৰৰ মহানুভৱতাৰ বিষয়ে দুআষাৰ লিখক।

পঢ়ক আৰু বুজি লওক (I)

শৰসন্ধান

মহাভাৰতৰ কথা। পঞ্চপাণ্ডৱ তেতিয়া বালক। পাৰম্পৰিক নিয়ম মতেম্প পঞ্চপাণ্ডৱ আৰু কৌৰৱ ভাতৃগণক যুদ্ধশিক্ষা প্ৰদান কৰিবলৈ দ্ৰোণাচাৰ্য্যক নিয়োগ কৰা হ'ল। গুৰু দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প

পাণ্ডৱ আৰু কৌৰৱগণক অস্ত্ৰশিক্ষাৰ পাঠ দিয়া আৰম্ভ কৰিলে। এম্পদৰে কিছুদিন শিক্ষা প্ৰদান কৰাৰ পিছত গুৰুৱে তেওঁৰ ছাত্ৰসকলৰ অগ্ৰগতিৰ পৰীক্ষা লবলৈ থিৰ কৰিলে।

গুৰু দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প ঐ কাঠৰ পখী অনাম্প তাক এজোপা ওখ গছত আঁৰি দিয়ালে আৰু সকলো শিক্ষাৰ্থীকে তালৈ মাতিলে। সকলো উপস্থিত হোৱাৰ লগে লগে দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প তেওঁৰ পৰীক্ষা আৰম্ভ কৰিলে। প্ৰথমতে যুধিষ্ঠিৰ আগবাঢ়ি আহিল। দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প যুধিষ্ঠিৰক ধনু-শৰ তুলি লবলৈ কলে আৰু গছৰ ওপৰত থকা কাঠৰ পখীটালৈ আঙুলিয়াম্প তালৈ লক্ষ্য থিৰ কৰিবলৈ নিৰ্দেশ দিলে। যুধিষ্ঠিৰে ততালিকে লক্ষ্য স্থিৰ কৰি গুৰুদেৱৰ আদেশলৈ বৈ থাকিল। দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প যুধিষ্ঠিৰক সুধিলে -- ‘তুমি কি দেখিছা?’ যুধিষ্ঠিৰে উত্তৰ দিলে -- ‘গুৰুদেৱ, মম্প বৃক্ষ, কাঠৰ চৰাম্প, মোৰ মৰমৰ ভাতৃগণ আৰু আপোনাক দেখিছোঁ।’ যুধিষ্ঠিৰে এম্পদৰে উত্তৰ দিয়াত গুৰু দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প তেওঁক ধনু-কাঁড় নমাম্প থবলৈ আদেশ দিলে।

যুধিষ্ঠিৰৰ পাছত ভীম, দুৰ্যোধন আৰু তেওঁৰ ভাতৃগণক এজন এজনকৈ আহি লক্ষ্য স্থিৰ কৰিবলৈ আদেশ কৰিলে। তেওঁলোক প্ৰত্যেকেম্প ধনু-শৰ তুলি লোৱাৰ পাছত দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প এজন এজন কৈ প্ৰত্যেকে ‘কি দেখিছা’ বুলি সোধাত সকলোৱে যুধিষ্ঠিৰৰ দৰে উত্তৰ দিলে। তেতিয়া দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প খঙত অগ্নিশৰ্মা হৈ শিষ্যসকলক ধনু-শৰ নমাম্প থবলৈ দি নানান তিৰস্কাৰ কৰিলে।

শেষত তেওঁ অৰ্জুনক ধনু-শৰ লবলৈ কলে আৰু লক্ষ্য স্থিৰ কৰিবলৈ দিলে। অৰ্জুনে ধনুৰ গুণ-গানি লক্ষ্যলৈ চাম্প গুৰুৰ আদেশলৈ অপেক্ষা কৰি থাকিল। দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প অৰ্জুনক সুধিলে -- ‘তুমি কি দেখিছা?’ তেতিয়া অৰ্জুনে কলে -- ‘গুৰুদেৱ, মম্প গছৰ ওপৰত থকা চৰাম্পটো মাত্ৰ দেখিছোঁ।’ আনন্দিত হৈ দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প পুনৰ সুধিলে -- ‘তুমি পক্ষীটোৰ কি কি অংগ দেখিবলৈ পাম্পছা?’ তেতিয়া অৰ্জুনে কলে যে তেওঁ গোটম্প পক্ষীটো দেখা নাম্প; মাত্ৰ চকু সহ মূৰটোহে দেখিছে। তেতিয়া গুৰুৱে অৰ্জুনক পক্ষীটোৰ শিৰ কাঁবলৈ নিৰ্দেশ দিলে। গুৰুৰ আদেশ পোৱা মাত্ৰকে অৰ্জুনে তেওঁৰ ধনুত শৰসন্ধান কৰিলে। অৰ্জুনৰ ধনুৰ তীক্ষ্ণবাণে কাঠৰ পক্ষীটোৰ মূৰ দেহৰ পৰা বিচ্ছিন্ন কৰি পেলালে। দ্ৰোণাচাৰ্য্যম্প অতিশয় আনন্দিত হ’ল। তেওঁ

অৰ্জুনক ‘বিশ্বৰ সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ ধনুৰ্দ্ধৰ হোৱা’ বুলি আশীৰ্বাদ দিলে। তাৰ পাছত তেওঁ অৰ্জুনক আলিঙ্গন কৰিলে।

ঘৈনা দেখি বাকী ৰাজকোঁৱৰ সকলে লাজতে তলমূৰ কৰিলে। তেওঁলোকৰ কাৰো বুজিবলৈ বাকী নাথাকিল যে কি কাৰণত অৰ্জুন গুৰু দ্ৰোণাচাৰ্য্যৰ প্ৰিয়পাত্ৰ।

নতুন শব্দ

অসমীয়া শব্দ	হিন্দী অৰ্থ
কিছুদিন	কুচ দিন
আঁৰি দিয়া	লটকা দিয়া
আগবাঢ়ি	আগে বঢ়কৰ
লক্ষ্য থিৰ/লক্ষ্য স্থিৰ কৰা	নিশানা লগানা
পখী/পক্ষী	পক্ষী
চৰাম্প	চিড়িয়া
সুস্থিলে	পুচা
এম্পদৰে	ইসী তৰহ
ততালিকে	শীঘ্ৰ
খং	গুস্সা
অগ্নিশৰ্মা	বুৰী তৰহ গুস্সা হোনা
নমাম্প	উতাত কৰ
তিৰস্কাৰ	তিৰস্কাৰ
গুণ	গুণবত্তা
অপেক্ষা	অপেক্ষা
	সিৰ

শিৰ	আদেশ
আদেশ	নিৰ্দেশ
নিৰ্দেশ	নিশানা লগানা
শৰসন্ধান	পৈনা বাণ
তীক্ষ্ণবাণ	তীৰ চলানা
নিষ্ফেপ	টুট-ফুট জানা
বিচ্ছিন্ন	সবসে বড়া
অতিশয়	ধনুৰ্ধৰ
ধনুৰ্ধৰ	আলিগন
আলিগন	লজ্জিত হোকৰ
লাজত	সিৰ झुकना
তলমূৰ	সবসে প্ৰিয়
প্ৰিয় পাত্ৰ	

## পঢ়ক আৰু বুজি লওক (II)

### শিষ্টাচাৰ

শিষ্টাচাৰ মানৱ চৰিত্ৰৰ দাপোণ স্বৰূপ। শিষ্ট আৰু আচাৰ এম্প দুটা শব্দ লগ লাগি শিষ্টাচাৰ হৈছে। জন্ম, শিক্ষা আৰু পৰিবেশৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি মানৱ স্বভাৱে ৰূপ লয়। যাৰ স্বভাৱ বা আচৰণ সজ তেওঁকে সংস্বভাৱী বা শিষ্টাচাৰী বোলে। স্পয়াৰ বিপৰীত হলে অসং বা ব্যভিচাৰী বুলি কোৱা হয়।

শিষ্টাচাৰৰ কেতবোৰ প্ৰধান লক্ষণ আছে। সং স্বভাৱতো হবম্প লাগিব। তাক গঢ় দিব -- আন্তৰিক দয়া, সৰলতা, স্বভাৱৰ নম্ৰতা আৰু বিনয়ে। পূজনীয়জনৰ প্ৰতি শ্ৰদ্ধা, মিঠা মাত, সজ আচৰণ, খোলা মন শিষ্টাচাৰীৰ চিৰ সহচৰ। শিষ্টাচাৰীয়ে কেতিয়াও কাকো আঘাত নিদিয়। আনে কথা কলে তেওঁৰ কথা সম্পূৰ্ণ শুনে। মাজতে মাত নিদিয়। আৱশ্যক হলে অম্পনে কোৱাৰ পিছত নিজৰ মন্তব্য দিয়ে। আনৰ কথা মন দি শুনে। নিজৰ কথা বঢ়াম্প নকয়।

লোকৰ ভুল দেখি তেওঁ নাইহে। নিজৰো যে ভুল হব পাৰে -- সেম্প বিষয়ে সদায় সজাগ থাকে।

আগতেম্প কোৱা হৈছে যে শিক্ষা, সংস্কাৰ, সংগ আৰু পৰিবেশ আদিয়ে শিষ্টাচাৰ গঠনত সহায় কৰে। জীৱনত কৃতকাৰ্য্য হবলৈ বা উন্নতি কৰিবলৈ আমি সজ আচৰণ আৰু শিষ্টাচাৰ শিকা উচিত। বৰ্তমান সমাজত এম্প গুণৰ নিতান্ত অভাৱ পৰিলক্ষিত হৈছে। ৰাজনৈতিক জীৱনৰ দূষিত প্ৰভাৱে আমাৰ সামাজিক জীৱনো কলুষিত কৰিছে। আমি মনত ৰখা উচিত যে উদ্ধত জ্ঞানীতকৈ শিষ্টাচাৰী অজ্ঞও ভাল। সেয়ে আমি প্ৰথমৰে পৰা নিজৰ আচৰণ শুদ্ধ কৰিবলৈ বা নিজে শিষ্টাচাৰী হবলৈ চেষ্টা কৰা উচিত। মানৱতাৰ এম্প মুখ্য প্ৰমূল্যৰ আসন সদায় শ্ৰেষ্ঠ হৈ থাকিব।

নতুন শব্দ

অসমীয়া শব্দ	হিন্দী অৰ্থ
শিষ্টাচাৰ	শিষ্টাচাৰ
দাপোণ	দৰ্পণ
শিষ্ট	শিষ্ট

आचार	आचरण
सज	सत्
ब्याभिचाबी	व्यभिचारी
केतबोर	कुछ
प्रधान	मुख्य/प्रधान
लक्षण	लक्षण
हवम्प	होगा ही
गठ् दिया	रूप देना
बिनय	विनम्रता
मिठा-मात	मीठी बोली
खोला मन	खुला मन
चिब्र सहचर	चिर-सहचर
केतियाओ	कभी भी
काको	किसी को
आघात	आघात
नाहँहे	नहीं हँसता है
सजाग	जागरुक
आगतेम्प	पहले ही
शिका	सीखना
पबिलम्फित	परिलक्षित
दृषित	दूषित
कलुषित	कलुषित/कलंकित
उद्धत	उद्धत
मूर्ख	मूर्ख
अङ्ग	गुणवत्ता

## প্ৰমূল্য

### অভ্যাস

I. তলত দিয়া প্ৰতিযোৰ শব্দৰ পৰা প্ৰতিটো শব্দ ব্যৱহাৰ কৰি একোটকৈ অৰ্থপূৰ্ণ বাক্য ৰচনা কৰক।

1. লক্ষ্য : লক্ষ
2. বাণ : বান
3. ধনু : ধেনু
4. অগ্নিশৰ্মা : অগ্নিকাণ্ড
5. তিৰস্কাৰ : পুৰস্কাৰ

II. তলত দিয়া প্ৰতিটো শব্দকে একাধিক অৰ্থত ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰি। প্ৰতিটো শব্দৰে ভিন ভিন অৰ্থ প্ৰকাশ কৰিব পৰাকৈ ভিন ভিন বাক্য ৰচনা কৰক।

1. গুণ
2. পাত্ৰ
3. শৰ
4. ৰূপ
5. পাতল

III. তলত দিয়া প্ৰতিটো শব্দৰ পৰা এক বা একাধিক প্ৰতিশব্দ উলিয়াবলৈ সক্ষম হোৱাৰ ব্যৱহাৰ কৰি বেলেগ বেলেগ বাক্য ৰচনা কৰক।

1. শিৰ

2. পখী
3. গছ
4. কাঁড়
5. বন

IV. তলত দিয়া অনুচ্ছেদটোৰ পৰা বিপৰীতार्थক শব্দবোৰ বাচি উলিয়াস্প সেস্পবোৰ ব্যৱহাৰ কৰি একোটকৈ বাক্য ৰচনা কৰক।

“সুখ আৰু দুখ একো মুদ্ৰাৰে স্পপিঠি-সিপিঠি বুলি কব পাৰি। জীৱনটো সুখ আৰু দুখৰ সমষ্টি। এস্প পৃথিৱীত কোনো কাৰো আপোন বা পৰ নহয়। কোনো মানুহেস্প জন্মতেস্প ভাল বা বেয়া হৈ নাহে। মানুহৰ কাৰ্যস্পহে জীৱনৰ সফলতা বা বিফলতা নিৰ্ণয় কৰে। গতিকে মৃত্যুলৈকে মানুহে মানৱীয় প্ৰমূল্য সমূহৰ চৰ্চা আৰু সাধনা কৰা উচিত।

V. পাঠৰ আলমত উত্তৰ দিয়ক।

1. শৰসন্ধান পাঠটোৰ গূঢ়ত্ব কি বুলি ধাৰণা হয়, বহলাস্প লিখক।
2. দ্ৰোণাচাৰ্য্যৰ বিষয়ে দুআষাৰ লিখক।
3. ‘বিদ্যালয়ত শিষ্টাচাৰ শিকোৱা উচিত’ তাৰ ওপৰত ঐ টোকা লিখক।
4. শিষ্টাচাৰীৰ থাকিব লগীয়া গুণ কি কি? আলোচনা কৰক।

VI. তলৰ কথোপকথনটো সম্পূৰ্ণ কৰক।

ৰাজেশ : হেল্ল’ হেল্ল’ অভিজিৎ নেকি?

অভিজিৎ : কোন, ৰাজেশ নেকি?

ৰাজেশ : অ’। তোৰ ভাল নে?

অভিজিৎ : আছোঁ আৰু এক প্ৰকাৰ। .....

ৰাজেশ : ..... । মাৰাইতৰ খবৰ কেনে?

অভিজিৎ : ভালৈম্প আছে। ..... ।

ৰাজেশ : যোৱা পৰহি মম্প North Eastern Regional Collegeত যোগদান কৰিলোঁ।

অভিজিৎ : অভিনন্দন। ..... ।

ৰাজেশ : বৰ্তমানলৈকে অংক শাস্ত্ৰহে পঢ়াম্পছোঁ।

অভিজিৎ : ..... ।

ৰাজেশ : বৰ্তমানে ১২ হাজাৰকৈ দিছে।

অভিজিৎ : এম্পবাৰ তেনেহলে বিয়াখন পাও।

ৰাজেশ : এতিয়াম্প বিয়া বাৰুৰ কথা পাতিবৰ হোৱা নাম্প। আগতে ঘৰটোৰ অলপ মেৰামতিৰ কাম কৰাম্প লওঁ বুলি ভাবিছোঁ। ..... ।

অভিজিৎ : ময়ো বিয়াৰ কথা বৰ্তমান ভাবা নাম্প। কিন্তু দেউতাইতেতো পাৰ্টো পাৰ্টোকৈয়ে আছে।

ৰাজেশ : তম্প এদিন এম্পফালে আহ। তম্প অলপ সময় লৈয়ে আহিবি।

অভিজিৎ : বাৰু ঠিক আছে।

VII. হিন্দীলৈ অনুবাদ কৰক।

(নিজা সংবাদদাতা)

২৩ এপ্ৰিল, নগাওঁ

বিগত বছৰবোৰ দৰে এম্পবাৰো নগাওঁ জিলাৰ *বৰদৈচিলা ৰঙালী বিহু উৎসৱ সমিতি*ৰ উদ্যোগত আয়োজিত সাংস্কৃতিক সন্ধিয়াৰ অনুষ্ঠান যোৱা ২১ এপ্ৰিলত অনুষ্ঠিত হৈ যায়। বহু প্ৰজ্বলনেৰে এম্প অনুষ্ঠানৰ শুভাৰম্ভ কৰে নগাওঁ জিলাৰ উপায়ুক্ত প্ৰতীক হাজেলাম্প। নগাওঁ

মহাবিদ্যালয়ৰ অধ্যক্ষ মহেন্দ্ৰ মালাকাৰে আঁত ধৰা অনুষ্ঠানটোত বিশিষ্ট অতিথিৰ ভাষণ প্ৰদান কৰে শিল্পী প্ৰণৱ বৰুৱাসম্প।

বিবেকানন্দ ভট্টাচাৰ্য্যৰ তবলা বাদনেৰে নিশাৰ সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান আৰম্ভ হয়। প্ৰাঞ্জল শম্পকীয়াসম্প আবৃত্তি কৰা কবিতাসম্প দৰ্শক শ্ৰোতাক আপুত কৰে। শিৱসাগৰৰ জোনবিৰি বিহুৱাদলে প্ৰদৰ্শন কৰা বিহুৱে সাংস্কৃতিক অনাষ্ঠানক বিশেষ সৌষ্ঠব প্ৰদান কৰে। নিশা ১০ বজাৰ লগে লগেসম্প অসমৰ স্বনামধন্য শিল্পী ডা. ভূপেন হাজৰিকাসম্প শ্ৰোতালৈ তেওঁৰ গীতৰ শৰাসম্প আগবঢ়ায়। ‘গংগা মোৰ মা’ৰে আৰম্ভ কৰা হাজৰিকাৰ সুললিত কল্পসম্প উপস্থিত প্ৰায় ২০ হাজাৰ দৰ্শকক তিনি ঘণ্টা সময় মন্তমুগ্ধ কৰি ৰাখে।

এসম্প সাংস্কৃতিক সন্ধিয়া নৱ প্ৰজন্মৰ শিল্পী জুবিন গাৰ্গৰ অনুষ্ঠান প্ৰদৰ্শনৰ পিছত নিশা প্ৰায় ৩ বজাত অন্ত পৰে।

## VIII. অসমীয়ালৈ অনুবাদ কৰক।

তেজপুৰ 10 সিতম্বৰ।

नपाम में आज तेजपुर विश्वविद्यालय का छठा दीक्षांत समारोह सोत्साह संपन्न हो गया। असम के राज्यपाल लेफटिनेंट जनरल (अवकाश प्राप्त) श्री अजयसिंह (जो विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी हैं) ने समारोह की अध्यक्षता की तथा उपाधियाँ वितरित कीं।

इस अवसर पर अंतरिक्ष विज्ञान केन्द्र, बंगलोर के अध्यक्ष डॉ. यू.आर. राव ने दीक्षांत भाषण दिया। डॉ. राव ने भारत में विज्ञान खासकर अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति का विवरण देते हुए कहा कि 2020 तक हम अपना अंतरिक्ष यान चंद्रमा पर अवश्य उतार देंगे। उन्होंने भारतीय वैज्ञानिकों की क्षमता और प्रतिभा की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

अपने अध्यक्षीय भाषण में राज्यपाल श्री अजयसिंह ने विशेष योग्यता प्राप्त करनेवाले छात्रों को बधाई दी। उन्होंने भारतीय प्रतिभा के पलायन पर चिंता प्रकट करते हुए कहा कि सभी को देश की उन्नति के लिए काम करना चाहिए।

तेजपुर विश्वविद्यालय के कुलपति के आभार-प्रदर्शन के साथ समारोह समाप्त हुआ।

शाम को विश्वविद्यालय-प्रांगण में युवाओं द्वारा एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बिहुगीतों और बिहुनृत्यों ने समा बाँध दिया।

IX. (i) ৰাময়ণৰ ঐা চৰিত্ৰৰ বিষয়ে আপোনাৰ নিজৰ ভাষাত লিখক।

(ii) ভাৰতৰ ঐা জলন্ত সমস্যাৰ বিষয়ে ঐা অনুচ্ছেদ লিখক।

## স্পিনি

এতিয়ালৈ পোৱা পাঠবোৰত আমি অসমীয়া ভাষাৰ বিভিন্ন ব্যাকৰণগত বৈশিষ্ট্য আৰু বাক্য-ৰীতিৰ বিষয়ে আলোচনা কৰিলোঁ। সাধাৰণতে দৈনন্দিন জীৱনত ব্যৱহাৰ হোৱা শব্দাৱলী আৰু বাক্য-ৰীতিৰ উদাহৰণ ১ৰ পৰা ২৩ পৰ্যন্ত পাঠত দিয়া হৈছে। ভূত, ভবিষ্যৎ আৰু বৰ্তমান কালৰ বিভিন্ন ৰূপ আৰু বিভক্তি সমূহৰ বিশেষ প্ৰয়োগ, সৰ্বনামৰ মূল আৰু তিৰ্য্যক ৰূপৰ উদাহৰণ আগৰ পাঠবোৰত দিয়া হৈছে। লগতে প্ৰত্যেক পাঠতে উল্লেখ হোৱা সাংস্কৃতিক শব্দ আদিৰ বিষয়েও টোকা দিবলৈ চেষ্টা কৰা হৈছে।

এম্প পাঠটোত সকলো ধৰণৰ ব্যাকৰণগত প্ৰয়োগৰ পুনৰাবৃত্তি কৰিবলৈ চেষ্টা কৰা হৈছে। লোকপ্ৰিয় ঐা কাহিনীৰ মাধ্যমেৰে এপিনে মানৱীয় প্ৰমূল্যৰ তাত্ত্বিক দিশত ৰেখাপাত কৰা হৈছে, আন পিনেদি কম শব্দেৰে অসমীয়া ভাষাৰ লিখাৰ উদাহৰণো তুলি ধৰা হৈছে। শিক্ষাৰ্থীসকলে এম্প বিভিন্ন প্ৰয়োগ সমূহলৈ মন কৰিব।

ভাষা অভ্যাসেৰেহে শিকিব পাৰি। কথাত কয় ‘অভ্যাসৰ নৰ, কৰ্ণ পথে কৰে শৰ।’ সেয়ে শিক্ষাৰ্থীসকলে বিভিন্ন প্ৰয়োগসমূহৰ বাৰে বাৰে অভ্যাস কৰা উচিত।

\*\*\*\*\*